फरीदाबाद
मजदूर समाचार
राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान–प्रदान के जरियों में एक जरिया

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें– < http://faridabadmajdoorsamachar.blogspot.in>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद - 121001

नई सीरीज नम्बर 305 1/– नवम्बर 2013

संगठित प्रयास किस तरह से ?

इन तीन-चार वर्षों के घुमावदार उफानों में जीवन के कुछ पहलू चकित कर देने वाली स्पष्टता से उभरे हैं।

जीवन के लिये अनिवार्य समझे जाते सामाजिक सम्बन्ध जो कि वास्तव में जीवन को बाँधते हैं उनमें दरारें पड़ी हैं।

आज वस्तुओं के उत्पादन के तरीके जीवन के उल्लास में, जीवन के फैलाव में, जीवन के सफर में सीमा बने दिखे हैं।

करोड़ों लोगों के दैनिक बौद्धिक श्रम से उपजे जानकारियों के महासागरों ने ज्ञान के बाड़ों से बाहर तैरना सुलभ बना दिया है।

विस्तृत रिश्ते बनाने, कल्पना करने और एक्सपेरिमेंट करने का नया उत्साह हर जगह है।

क्षितिजों में घमासान मचा है। क्षितिज की बारीक रेखा किस तरह खींची जायेगी और कौन खींचेगी ? इसकी क्षमता और आत्मविश्वास सब के हैं।

जीवन के कौशल और उसकी दमक के अनेक अवसर, अद्भुत शब्दकोष और मुखर सामर्थ्य निखरे हैं, चमकने लगे हैं।

कई और जीवन रचने के तरीकों को छू पाने के लिये जीवन रचने के तरीके और प्रयोग निरंतर, बेचैन तलाश में हैं। एक बुजुर्ग का कहना है कि नृत्यों में मगन को उन लोगों ने पागल समझा जो संगीत ही सुन नहीं पाये।

सत्ता के सम्मुख खड़े होना बिना किन्हीं माँगों के आज का अद्भुत नृत्य है। यह एक अलबेला लम्हा है जिसमें हम पर असर डालने की सत्ता की क्षमता खुद को निष्क्रिय पाती है।

कब्जा हटाने पर ऐसा लगता है जैसे हम ने एक-दूसरे को पहली बार देखा हो।

ये समय अर्जियों का नहीं, ज्ञापनों का नहीं, याचिकाओं का नहीं, बल्कि ये समय एक-दूसरे को, अनेक को, सब को रचनात्मक प्रस्ताव देने का है।

ओके। ठीक है। ये सब किसलिये ?

इधर मित्रों के साथ कुछ समय से गहन बातचीत चल रही है कि इन परिस्थितियों में किस तरह के जोड़ और आदान-प्रदान हों ताकि अलग-अलग स्थानों और भिन्न-भिन्न समयों की प्रेरणायें, तरंगें, कोशिशें, प्रयोगों का मेल सहज बने।

इस विचार-विमर्श में दो बाधायें लगती हैं –

एक ये कि, जीवन के मूल्यांकन के हालात, हताशा, दशा, असफलता, उत्पीड़न, दमन, दबाव परिवर्तन के लिये प्रस्थापना बनते हैं, आधार बनते हैं। इस मूल्यांकन की समझ ये है कि एक दिन इस अँधेरे से निकल कर रोशनी की तरफ जाना हो पायेगा। ये मूल्यांकन भूल जाता है कि हम सब हजारों दरारों-तरेड़ों से आती किरणों से रोशन हैं।

दूसरी ये कि, जीवन के मूल्यांकन में लोगों को बौद्धिक और व्यवहारिक, ज्ञान और अनुभव, शब्द और आवेग के गहरे बँटवारे, विभाजन से देखना। इस मूल्यांकन में दैनिक जीवन के अभ्यास और क्रियाओं – विचार करना, पुनर्विचार करना, सपने देखना, याद में रखना, मुड़ कर देखना, नये को टैस्ट करना – इन सब को नजरअन्दाज किया जाता है। ''हम सुनते सब की हैं, करते अपने मन की हैं'' को तलाक दे दिया जाता है।

जब कोई सोच और उसकी माँसपेशियाँ जीवन के विस्तार में जीवन्त नहीं रहती तब उस सोच के लिये विलाप न ही करें तो अच्छा है। आईये, अपनी ऊर्जा को बेलगाम छोड़ें, नई रचनायें करें, नई रचनाओं के प्रयोगों द्वारा अपने आज तथा निकट भविष्य को आनन्दमय करें। ■

निमन्त्रण

आज विश्व के सात अरब लोग कई तानों-बानों से जुड़े हैं। यह समय बहुत-ही बड़े परिवर्तनों का दौर है। आज छोटे से छोटी बात जंगल की आग का चरित्र लिये है। इस सिलसिले में एक कदम के तौर पर हम बातचीतों के लिये यह निमन्त्रण दे रहे हैं। प्रत्येक माह के अन्तिम रविवार को मिलने का हम प्रयास करेंगे। नवम्बर में 24 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुये रास्ता है, पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी है।

हकलाना-काब्बा बोलना कोई झिझक की बात नहीं है। टुकड़ों में ही बातों के बारे में बेफिकर रहिये। तारतम्य का अभाव, छूटी कड़ी-लड़ी-डँका बातचीतों में बाधक नहीं होंगे। टेढेपन, गतिशील टेढेपन से पार पाने के लिये सात अरब लोगों के बीच बातचीतों को बहुत बढाने की आश्यकता है।

क्या करें और क्या नहीं करें, कैसे करें और कैसे नहीं करें हमारे लिये महत्वपूर्ण हैं। इस सन्दर्भ में प्रत्येक के अनुभव व विचारों का स्वागत है। चर्चाओं को-बहस को समेटने-समाप्त करने के प्रयासों से मुक्त ; आदरपूर्ण और आनन्दपूर्ण बातचीत की कोशिश है।

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये–पैसे की दिक्कत रहती है।

★ महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं।

मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

फैक्ट्रियों में रिसावों की, तरेड़ों की एक झलक

वीयरवेल मजदूर : ''प्लॉट बी-61 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में 700 टेलर और फिनिशिंग का काम कम्पनी की बी-134 फैक्ट्री में। पाँच-छह महीनों से फैक्ट्री में मजदूरों की हलचलें बढी हुई हैं। इस दौरान प्रोडक्शन मैनेजर और एच आर मैनेजर पिटे हैं। मास्टर पिटे हैं — एक ई.एस.आई. अस्पताल पहुँचा और एक ने पाँव पकड़ लिये। कम्पनी में ज्यादा पुराने मजदूर नहीं हैं क्योंकि कम्पनी मजदूरों को निकालती रही है। ऐसे में 200 के करीब मजदूरों का वर्ष-भर पहले ग्रुप बना। यह 4-5 वर्ष से काम कर रहे मजदूर हैं और कम्पनी इन्हें निकालना चाहती है। इन 200 के साथ दो वर्ष से अधिक समय से काम कर रहे 100 मजदूर भी जुड़ गये जिनकी ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। फिर दो वर्ष से कम समय से काम कर रहे 400 टेलर भी जुड़ गये जिनकी ई.एस.आई. ही है, पी.एफ. नहीं है। तीन सौ ई.एस.आई. व पी.एफ. वालों को कम्पनी निकाल नहीं पाई तब मैनेजमेन्ट ने दो वर्ष से कम सर्विस वाले 400 को 11 सितम्बर को हिसाब देना चाहा। कोई मजदूर हिसाब लेने नहीं गया। किसी मजदूर को निकाल नहीं पाई तब कम्पनी ने एक-डेढ वर्ष से नौकरी कर रहे दो-तीन मजदूरों को 34-34 हजार रुपये हिसाब में दे कर तोड़ा। तब और टेलर जाने लगे। छह-सात महीने नौकरी वालों को 16-17-18,000 और एक-दो वर्ष वालों को 34,000 रुपये हिसाब में दिये, 26 सितम्बर तक 400 नये टेलर हिसाब ले गये। अब 300 टेलर फैक्ट्री में हैं। कभी 8 घण्टे काम, कभी 2 घण्टे काम, कभी काम ही नहीं। मैनेजर नहीं हैं और मास्टर बोलते नहीं। मैनेजिंग डायरेक्टर बुड़बुड़ाता है कि सब का हिसाब करके रहेंगे।''

ऑटोडेकर श्रमिक : ''*(मजदूर समाचार के अक्टूबर अंक में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, 30 स्थाई मजदूर और पाँच ठेकेदारों के जरिये रखे 170 मजदूर, तनखा देरी से, ओवर टाइम का भुगतान बहुत देरी से, पैसे माँगने पर धमकी सम्बन्धी मजदूरों की बातों को कम्पनी के एक अधिकारी ने फोन कर झूठ तथा कम्पनी की बदनामी करने वाली कहा। आई.एम.टी. मानेसर में सैक्टर-3 में प्लॉट 91 स्थित इस फैक्ट्री के मजदूरों ने अक्टूबर में जो कहा उसे यहाँ देखिये।)* 21 सितम्बर को एक मजदूर को बुखार चढा। तेज बुखार। बताने पर भी कोई सुपरवाइजर देखने नहीं आया। सहकर्मी रुमाल भिगो कर माथे पर रखते रहे, पानी पिलाते रहे और फिर उसे ई.एस.आई. अस्पताल ले गये। डॉक्टरों ने भर्ती कर लिया.... उस मजदूर का ई.एस.आई. कार्ड भी नहीं बना था। दूसरे दिन, 22 तारीख को सुबह 8 बजे सब मजदूर फैक्ट्री के बाहर खड़े हो गये, फैक्ट्री में कोई नहीं गया। ***हाईलैक्स*** और ***लुमैक्स*** फैक्ट्रियों के मजदूरों ने समर्थन किया। ठेकेदार ले जाने आये, कोई मजदूर नहीं गया। स्थाई मजदूरों और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को अलग-अलग खड़े होने को कहा। एक भी अलग नहीं हुआ, सब एक साथ रहे। फैक्ट्री मैनेजर आया और बोला पर किसी ने उनको भी नहीं सुना तथा कह दिया कि इज्जत बचाना चाहते हो तो अन्दर जाओ। एक बजे ठेकेदार बोले कि आगे से 1 से 10 तारीख के बीच तनखा तथा 15 तक ओवर टाइम के पैसे दे दिये जायेंगे और अभी जो बकाया हैं उन पैसों को दो दिन में दे देंगे। एक बजे मजदूर फैक्ट्री में गये, मशीनें चालू की। जो कहा था वह किया नहीं। दो दिन माँगे थे, हम ने चार दिन दिये और फिर 28 तारीख को सुबह 8 बजे सब मजदूर फिर फैक्ट्री के बाहर खड़े हो गये। तत्काल परिणाम आया। यह कहते हुये मजदूरों ने फैक्ट्री में प्रवेश किया कि आगे से मुकरने पर फिर ऐसा ही करेंगे। सितम्बर की तनखा एक ठेकेदार ने 10 अक्टूबर को और बाकी ठेकेदारों ने 11-12 अक्टूबर को दे दी।''

एस्कोर्ट्स कामगार : '' फरीदाबाद में सैक्टर-13 स्थित कम्पनी के फार्मट्रैक प्लान्ट में 25 अक्टूबर को मजदूरों ने कैन्टीन में भोजन का बहिष्कार किया। स्थाई मजदूरों, कैजुअल वरकरों , ठेकेदारों के जरिये रखे 1200 मजदूरों ने ए-शिफ्ट में कैन्टीन में भोजन का बहिष्कार किया तब मैनेजमेन्ट ने नोटिस में अन्नदेवता का अपमान नहीं करने की बात की। मजदूरों के कदम का तत्काल कारण प्याज देना बन्द करना था पर कैन्टीन में भोजन लगातार खराब रहता है जबकि सहायक सामग्री के अतिरिक्त ठेकेदार कम्पनी को एक थाली भोजन के लिये 45 रुपये दिये जाते हैं। वास्तव में मैनेजमेन्ट-यूनियन दीर्घकालीन समझौते के बाद कम्पनी की हर फैक्ट्री में स्थाई मजदूरों, कैजुअल वरकरों, ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों का टोरचर (यातना) बढ गया है। फार्मट्रैक प्लान्ट के अन्दर काम के बोझ के विरोध में एक स्थाई मजदूर द्वारा आत्मदाह की कोशिश....... एस्कोर्ट्स फैक्ट्रियों में कैन्टीन वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। एस्कोर्ट्स थर्ड प्लान्ट और फार्मट्रैक प्लान्ट की कैन्टीनों के मजदूरों को 12 घण्टे रोज पर महीने के 4000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, सोना-खाना फैक्ट्रियों के अन्दर ही। एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट कैन्टीन वरकरों को 12 घण्टे रोज पर 4000-4500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। एस्कोर्ट्स रेलवे डिविजन और एस्कोर्ट्स सी एच डी प्लान्टों की कैन्टीनों में वरकरों को 12 घण्टे रोज पर 5000 रुपये ई.एस.आई. तथा पी.एफ. राशि काट कर। कैन्टीन वरकरों में 18 वर्ष से कम आयु के लड़के भी हैं। और, फूट के लिये भेदभाव देखिये : दिवाली पर स्थाई मजदूरों को 1 किलो मिठाई व 1100 रुपये उपहार में जबकि कैजुअल वरकरों तथा ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को उपहार में कुछ नहीं और ..... और मिठाई आधा किलो।''

प्रिमियर मोल्डिंग वरकर : '' 185 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में अक्टूबर 2001 में लगा था, कम्पनी रोल पर था, ई.एस.आई. तथा पी.एफ. राशि तनखा से काटते थे। अप्रैल 2013 में फण्ड के पैसे निकालने के लिये फार्म भरवाया और 16 दिन बाद पैसे बैंक खाते में आ गये पर पैसे अप्रैल 2008 से अप्रैल 2012 के दौरान के ही थे। आठ वर्ष की पी.एफ. राशि जमा ही नहीं की थी। यह बात कम्पनी अधिकारियों को कही तो वे बोले कि ठेकेदार ने जमा नहीं की, हम क्या करें ...... जबकि कोई ठेकेदार है ही नहीं, सब मजदूर कम्पनी स्वयं भर्ती करती है। खैर, फैक्ट्री में काम करता रहा। बीस दिन की छुट्टी ले कर 22 मई 2013 को घर गया। लौटने पर कम्पनी ने ड्युटी पर नहीं लिया। श्रम विभाग में मैंने शिकायत की। दस अक्टूबर की तारीख पर कम्पनी अधिकारी बोले कि ठेकेदार का मजदूर है। अब 31 अक्टूबर की तारीख पड़ी है।''

आकर्ष एक्सपोर्ट मजदूर : '' एफ-48 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में 150 मजदूर काम करते हैं जिनमें 10-12 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं और इन्हें भी दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं देते। फिनिशिंग विभाग में काम करते 50 मजदूरों, जिनमें 15 महिला हैं, की तनखा 3300-4000 रुपये। चैकरों की तनखा 5-6,000 रुपये। सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 250 रुपये कह कर भर्ती किया था पर अगस्त की तनखा 210 के हिसाब से देने लगे। टेलरों ने पैसे लेने से इनकार कर दिया। कुछ टेलर एक यूनियन के पास गये। लीडर फैक्ट्री में आये और हिसाब करवाया —11 टेलरों ने 18-18 हजार रुपये प्राप्त किये जिनमें से दस प्रतिशत लीडर ने ले लिये। बाकी 59 टेलर 8 घण्टे के 240 रुपये में काम करने को राजी हो गये। फैक्ट्री में रोज सुबह 9 से रात 9 की ड्युटी है और रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।''

एन टी एफ श्रमिक : ''प्लॉट 49 सैक्टर-3, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में प्लास्टिक शीटों के लिये कम्प्युट्रीकृत बड़ी प्रैस पर 4 मजदूर असेम्बल करते हैं, 8 मशीन पर रहते हैं और 4 मजदूर कटिंग करते हैं। सफाई के लिये सफाईकर्मी हैं पर सितम्बर में एक दिन फोरमैन ने कटिंग वरकरों से सफाई करने को कहा। एक बन्दे ने करने की बात की तो दूसरे ने नहीं करने की। चार कटिंग वालों ने मीटिंग की, सफाई नहीं करने का निर्णय लिया, सफाई नहीं की। फोरमैन चुप रह गया, कुछ नहीं बोला। सफाईकर्मी ने सफाई की। हमारे बीच की बातें : फैक्ट्री में अगर सफाई कर्मी नहीं हैं तो पहले फोरमैन सफाई करे फिर वरकर करेंगे क्योंकि फोरमैन की तनखा ज्यादा है, परमानेन्ट है, कम्पनी का है जबकि हम मजदूर ठेकेदार के जरिये रखे गये हैं, हमारा इस फैक्ट्री से क्या लेना-देना, आज यहाँ हैं, कल वहाँ कहीं होंगे..... दो प्रैसों पर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 64 मजदूर काम करते हैं, सब को ठेकेदार के जरिये रखा है। फैक्ट्री में रिम विभाग और पेन्ट शॉप में भी 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। यहाँ ***मारुति सुजुकी*** वाहनों के बम्फर और खिड़की की बगल की शीट तैयार किये जाते हैं। ''

(बाकी पेज तीन पर)

फैक्ट्रियों में रिसावों.......(पेज दो का शेष)

सेन्डेन विकास कामगार : '' प्लॉट 65 सैक्टर-27ए, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में हम 500 से ज्यादा मजदूरों को ठेकेदार ***जिएस कन्सलटेन्सी सर्विसेज*** के जरिये रखा है। ठेकेदार कम्पनी मजदूरों की तनखा से ई.एस.आई. तथा पी.एफ. राशि काटती है , 20-22 महीने काटते हैं और 8-9 महीने का पी.एफ. ही जमा करते हैं। एतराज करने पर डराते-धमकाते हैं और मारपीट पर उतर आते हैं।''

और सेवाग्राम

सेवाग्राम आश्रम बापू कुटी -नई तालीम समिति -गाँधी चित्र प्रदर्शनी वरकर : '' सेवाग्राम, जिला वर्धा, महाराष्ट्र स्थित बड़े श्रद्धा पर्यटन स्थल पर मकानों, खेती, गौशाला, यात्री निवास, भोजनालय, बागान आदि के संचालन व कार्य के लिये अलग-अलग अध्यक्षों के तहत कार्यालयों में बाबू स्थाई हैं और 95 प्रतिशत मजदूर अस्थाई हैं। साप्ताहिक अवकाश नहीं, महीने में कोई छुट्टी नहीं। महिला मजदूरों की जब 8 घण्टे की ड्युटी रहती है तब उन्हें दिन के 80 रुपये और जब 12 घण्टे की ड्युटी रहती है तब दिन के 125 रुपये। पुरुष मजदूर को दिन में 8 घण्टे के 100 रुपये और रात में 12 घण्टे के भी 100 रुपये। खेतों में हल चलाते मजदूरों को 8 घण्टे के 125 रुपये। गाँधी चित्र प्रदर्शनी में 12वीं-14वीं तक पढे मजदूरों को महीने के तीसों दिन काम पर 2000, 2500, 3000 रुपये और यहाँ भोजनालय में काम करने वालों को 2700 से 4500 रुपये। दस-पन्द्रह-बीस वर्ष से लगातार काम कर रहे मजदूर अस्थाई हैं..... खेती में 60 वर्ष से ऊपर आयु के होने पर काम नहीं कर पा रहे दो मजदूरों को इधर घर भेज दिया — सेवाग्राम स्थित गाँधी संस्थानों में काम करते मजदूरों की भविष्य निधि (पी.एफ.) नहीं है, पेन्शन नहीं है। मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं है, गाँधी संस्थानों में कोई दवाखाना नहीं है, फर्स्ट एड भी नहीं है। हर मजदूर को कई काम करने पड़ते हैं, खाली नहीं बैठने देते, भोजनालय बन्द है तो घास छीलो। दिन-रात काम रहता है, दूर-दूर से लोग आते रहते हैं। दिवाली पर कार्यालय बाबूओं को बोनस में एक पगार। मजदूरों को बोनस नहीं देते थे, मजदूर बोले तब बोनस देने लगे पर बोनस में एक महीने की तनखा नहीं देते बल्कि 1000 रुपये ही देते हैं।''

पाइनेक्स ओवरसीज मजदूर : '' ए-249, बी-63, बी-270 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में नौकरी के लिये मजदूरों से हर महीने मैनेजमेन्ट के लोग पैसे लेते हैं। तीनों फैक्ट्रियों का मुखिया, जो कि मैनेजिंग डायरेक्टर का भाई भी है, यह जानता है कि मजदूरों से रिश्वत ली जाती है पर कहता है कि मुझे सिर्फ काम से मतलब है। ए-249 वाली फैक्ट्री में 250 मजदूर हैं — दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं, ई.एस.आई नहीं, पी.एफ. नहीं। डेढ सौ सिलाई कारीगरों को 8 घण्टे के 260-270 रुपये और विभाग अधिकारी हल्के काम तथा कम जानकार टेलरों से हर महीने 500 रुपये तथा काम जानने वालों से 200 रुपये लेते हैं। बी-63 स्थित फैक्ट्री में काम करते 250 मजदूरों में 15-20 हैल्परों की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। इन 15-20 को दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन देते हैं पर साहब लोग इन में हर एक से महीने में 1000-1500 रुपये ले लेते हैं। टेलरों में 100 दिहाड़ी वालों को 260-270 रुपये 8 घण्टे के देते हैं और 200-500 रुपये प्रतिमाह रिश्वत लेते हैं। पीस रेट पर काम करने वाले 50 टेलरों से अच्छे रेट के लिये कमीशन लेते हैं। बी-270 वाली फैक्ट्री में भी ढर्रा यही है। तीनों फैक्ट्रियों में सुबह 9 से रात 8 की शिफ्ट है और रात 11 बजे तक रोक लेते हैं। रविवार को कहने को सुबह 9 से साँय 6 तक काम होता है पर पूरी रात रोक लेते हैं, सुबह 4 बजे तक काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। ए-249 और बी-63 फैक्ट्रियों में पीने का पानी बहुत खराब, शौचालय बहुत गन्दे।''

ए ई आई इंजीनियरिंग श्रमिक : '' प्लॉट 88 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 8 की शिफ्ट है और रात 12-1 बजे तक रोक लेते हैं। रविवार को सुबह 7 से दोपहर बाद 3½ बजे तक काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। प्रैस, वैल्डिंग, ड्रिल, पैकिंग विभाग हैं। पावर प्रैस 35 हैं, सब चलती हैं। बीस स्थाई मजदूर और 20 कैजुअल वरकर पावर प्रैस चलाते हैं। पावर प्रैस चलाने वाले 20 कैजुअलों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, तनखा 4500 रुपये, और इन में 10 महिला मजदूर भी हैं। पावर प्रैसों पर एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं — स्प्रिंग टूटने, चाबी टूटने पर हाथ कटते हैं। हाथ कटने पर ई.एस.आई. भेज देते हैं — पीछे की तारीख से ई.एस.आई. लागू करवा देते हैं। हाथ कटे ठीक होने पर फिर पावर प्रैस चलायें अन्यथा जायें। अभी 5 हाथ कटे मजदूर पावर प्रैस चलाते हैं — बहुत पुराने हैं, स्थाई हैं। महिला मजदूरों से जबरन पावर प्रैस चलवाते हैं और हाथ कटने पर निकाल देते हैं। कुछ माह पहले तीन दिन में तीन मजदूरों के हाथ कटे।''

राधनिक कामगार : '' 215 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में जून 2011 से जुलाई 2012 तक लगातार 13 महीने काम किया और अब अक्टूबर में बोनस में 630 रुपये दिये...... मैनेजर से मिला तो बोले कि जनरल मैनेजर से मिलो। जी एम ने कैशियर से बात करने को कहा। कैशियर बोला कि मार्च 2012 के बाद का बोनस दे दिया है। जून 2011 से मार्च 2012 के बोनस के पैसे अब नहीं मिलेंगे, फाइल जमा हो गई है।''

दिल्ली मैट्रो रेल वरकर : '' हाउसकीपिंग में दिल्ली मैट्रो में बहुत मजदूर काम करते हैं। दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी हमें नहीं देते, 8 घण्टे के 212 रुपये और महीने के 5500 रुपये देते हैं। हमारी ई.एस.आई. नहीं है, पी.एफ. नहीं है। जो तनखा देते हैं वह भी देरी से, 16-17-18 तारीख को देते हैं।'' ***ट्रैक कम्पोनेन्ट्स मजदूर :*** '' प्लॉट 21सैक्टर-7, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में कार्यरत 250 स्टाफवालों में 50 परमानेन्ट हैं और 1000 वरकरों में तो एक भी स्थाई मजदूर नहीं है, सब को 7 ठेकेदारों के जरिये रखा है। छह महीने में नया पी.एफ. नम्बर बनवा देते हैं। यहाँ पावर प्रैसों की 6 लाइनों , सी एन सी की 3 लाइनों और वैल्ड शॉप की 9 लाइनों पर ***होण्डा*** तथा ***हीरो*** दुपहियों और ***मारुति सुजुकी, महिन्द्रा, होण्डा सियेल, टाटा, बी एम डब्लू*** कारों के हिस्से-पुर्जे 10½-10½ घण्टे की दो शिफ्टों में बनते हैं। रविवार को 8 घण्टे, 12 घण्टे भी काम। पावर प्रैसों पर सैन्सर पुनः लगाने से हाथ कटना बहुत कम हो गया है पर सुपरवाइजर तथा मैनेजर उत्पादन बढाने के लिये पीछे पड़े रहते हैं। फर्श उबड़-खाबड़ होने के कारण ट्राली पलटती रहती हैं, हाथ-पैर टूटते रहते हैं, चोट के कारण 5-6 मजदूर हर समय मेडिकल छुट्टी पर रहते हैं। साल-भर से कैन्टीन है, भोजन ठीक नहीं है। मजदूर कहते हैं कि चाय ढँग की दो और सुबह 7 की शिफ्ट में नाश्ता दो — पैसे हम मजदूर देंगे।''

ई-शक्ति श्रमिक : '' 692 उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री जुलाई में चेन्नई से आई है। बाइंग हाउस है और यहाँ कम्प्युटरों पर काम करते 45 पैटर्न मास्टर तथा सैम्पल बनाते 18 टेलर व 2 हैल्पर हैं। पी.एफ. होना चाहिये पर है नहीं, ई.एस.आई. ही है। चेन्नई में सिलाई कारीगर 20-30,000 रुपये तनखा लेते थे और यहाँ काम जचाने आये थे। यहाँ 13,000 रुपये तनखा कह कर नये टेलर भर्ती किये थे पर दे 11,000 ही हैं और अब नयों को 9500-10,000 रुपये में लगा रहे हैं। काफी जटिल काम है। सुबह 9½ से साँय 6½ की शिफ्ट है और महीने में 20-25 दिन रात 8½ तक रोकते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से है पर अभी तक जुलाई के पैसे ही दिये हैं। अगस्त और सितम्बर की ओवर टाइम के पैसे आज 29 अक्टूबर तक नहीं दिये हैं।''

सेबरॉस ऑटो कामगार : '' प्लॉट 181 सैक्टर-5, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 12½-12½ घण्टे की दो शिफ्टों में 9 प्रैशर डाईकास्टिंग मशीनों द्वारा अल्युमिनियम की ढलाई होती है — डाइयों पर ***सुजुकी*** छपा होता है। रविवार को भी दोनों शिफ्ट, 15 अगस्त को भी काम — शिफ्ट बदलती है तब कुछ मजदूर 24 घण्टे काम करते हैं। ......''

★ ***दिल्ली*** सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन (1.10.2013 से)
अकुशल श्रमिक : 8086 रुपये (8 घण्टे के 311 रुपये) ;
अर्ध-कुशल श्रमिक : 8918रुपये (8 घण्टे के 343 रुपये) ;
कुशल श्रमिक: 9802 रुपये (8 घण्टे के 377 रुपये)।

★ 1.7.2013 से ***हरियाणा*** सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन :
अकुशल मजदूर : 5342 रुपये (8 घण्टे के 205 रुपये) ; उच्च कुशल मजदूर : 5992 रुपये (8 घण्टे के 230 रुपये)।

जुड़ने–जोड़ने के लिये

मजदूर हितैषी मजदूर

लक्ष्य है : मजदूरों की सक्रियता बढाने में योगदान देना

सदस्य बनें, सहयोगी बनें

1. कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की।

2. कानून अनुसार शोषण मुख्य तरीका है शोषण का। ..... भाप-कोयले की मशीनों के दबदबे के दौरान शोषण की दर एक सौ-दो सौ प्रतिशत थी। आज इलेक्ट्रोनिक्स वाली मशीनों के दौर में मजदूर आठ-दस मिनट के काम द्वारा अपनी दिहाड़ी पैदा कर देते हैं। आज शोषण की दर तीन हजार-चार हजार प्रतिशत है। ..... आज मजदूर जो पैदा करते हैं उसके आधे से ज्यादा हिस्से, पचास प्रतिशत से अधिक को सरकारें टैक्सों के रूप में वसूल करती हैं। आज मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका एक-डेढ प्रतिशत हिस्सा ही मजदूरों को मिलता है। यह मजदूरों की आर्थिक दुर्दशा का मुख्य कारण है और इसकी समाप्ति के लिये मजदूरी-प्रथा का उन्मूलन एक अनिवार्य आवश्यकता है।

3. ....हम बहुत बड़े परिवर्तन के दौर में हैं। ज्यादा से ज्यादा मजदूरों की सक्रियता बहुत-ही जरूरी है अन्यथा बर्बादी हमारे सामने मुँह बाये खड़ी है। 4. इन हालात में कानून से परे शोषण के खिलाफ एक और संगठित प्रयास के तौर पर... ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन का गठन कर रहे हैं।...

8. ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हम सदस्य बनने की अपील कर रहे हैं। जो मजदूर दिन काटने की बजाय जीवन जीने के प्रयास करना चाहते हैं उन्हें हमारा निमन्त्रण है : **मजदूर हितैषी मजदूर** संगठन के सदस्य बनें। ''समय नहीं है'' के इस दौर में कुछ समय देना सदस्यता की अनिवार्य शर्त है। संगठन किसी भी संस्था से कोई आर्थिक योगदान नहीं लेगा इसलिये संगठन का सदस्यता शुल्क पाँच रुपये होगा और मासिक आर्थिक योगदान स्वैच्छिक।

9. सदस्यों की सँख्या और सक्रियता आगे चल कर संगठन की गतिविधियाँ निर्धारित करेगी। इस बीच तीन संयोजक और मित्र अपनी क्षमता अनुसार प्रत्येक मजदूर और मजदूर समूह को कानून से परे शोषण के खिलाफ कदम उठाने में सहयोग करेंगे।

मजदूर हितैषी मजदूर संगठन का अस्थाई कार्यालय मजदूर लाइब्रेरी, ऑटोपिन झुग्गी, एन आई टी फरीदाबाद— 121001 है।

फोन : 0129—6567014

1. प्रताप सिंह, संयोजक : हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड के कर्मचारी रहे हैं और अब वकालत करते हैं, मुख्यतः कर्मचारियों के केस लड़ते हैं।

फोन : 9818772710

2. जवाहर लाल, संयोजक : पोरिट्स एण्ड स्पैन्सर (वॉयथ) फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब श्रम न्यायालय में मजदूरों के केस लड़ते हैं। फोन : 9810933587

3. सतीश कुमार, संयोजक : गुडईयर टायर फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब ''मजदूर मोर्चा'' के सम्पादक हैं।

जी 4 एस सुरक्षाकर्मी

जी 4 एस सेक्यूर सोल्युशन्स गार्ड : '' 16 कम्युनिटी सेन्टर सी-ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली में कार्यालय वाली कम्पनी का 25 वर्ष में यह आठवाँ नाम है। यह दिल्ली क्षेत्र की ही बात है। दिल्ली में कम्पनी 1200 संस्थानों को 7500 गार्ड, 1000 ड्राइवर, डी टी सी को 1600 कण्डक्टर, गनमैन, माली, चपरासी, इलेक्ट्रीशियन, कैश ट्रान्जैक्शन के लिये 500 लोग, कैमरे-इलेक्ट्रोनिक सेक्युरिटी के लिये 2500 वरकर सप्लाई करती है। कम्पनी की मैनेजिंग डायरेक्टर एक सेवानिवृत आई.पी.एस. अधिकारी है। कॉरपोरेट कार्यालय गुड़गाँव में है और भारत में इस समय कम्पनी में एक लाख बासठ हजार के करीब लोग कार्यरत हैं। दुनिया के 117 देशों में कम्पनी उपस्थित है और कुछ स्थानों पर तो यह सीधे-सीधे जेलखानों का संचालन करती है। दिल्ली वाली जी 4 एस सेक्यूर सोल्युशन्स कम्पनी बच्ची है जी 4 एस होल्डिंग्स ऑफ इण्डिया लिमिटेड की। वैसे अन्ततः नियन्त्रण जी 4 एस पी एल सी, युनाइटेड किंगडम का है।

''जी 4 एस सेक्यूर सोल्युशन्स के ग्राहकों में राष्ट्रसंघ के यू एन डी पी तथा यूनिसेफ, अन्तरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आई एल ओ), विश्व बैंक, अमरीका सरकार का दूतावास, ब्रिटेन सरकार का दूतावास, आस्ट्रेलिया सरकार का दूतावास, कन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इन्डस्ट्रीज (सी आई आई), जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली मैट्रो रेल, हाँगकाँग एण्ड शंघाई बैंकिंग कॉरपोरेशन, वोडाफोन, एक्सिस बैंक, सोसाइटी फोर एप्लाइड स्टडीज, उत्सव फैशन, मैसर्स मुकुल रोहतगी, पेन्गुइन बुक्स, इंडियन क्वोटेशन आदि-आदि हैं। ग्राहकों से कम्पनी दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन व समय-समय पर घोषित महँगाई भत्ता, पौने पाँच प्रतिशत ई.एस.आई. की राशि, पी.एफ. सम्बन्धी 13.61 प्रतिशत राशि, बोनस के लिये 8.33 से 10 प्रतिशत राशि, साप्ताहिक अवकाश व अन्य छुट्टियों के लिये 28.98 प्रतिशत राशि, ग्रेच्युटी के लिये 4.81 प्रतिशत, ट्रेनिंग के लिये 5 प्रतिशत, वर्दी व धुलाई के लिये 8 प्रतिशत, सर्विस टैक्स के लिये 12.36 प्रतिशत आदि लेती है। इन सब के अतिरिक्त सर्विस चार्ज व मुनाफे के लिये कम्पनी ग्राहकों से पैसे लेती है।

''जबकि गार्डों के लिये 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट होना और साप्ताहिक अवकाश नहीं होना सामान्य बात है। कन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इन्डस्ट्रीज के यहाँ भी गार्ड 12-12 घण्टे ड्युटी करते हैं। महीने में 32 से 152 घण्टे ओवर टाइम और उसका भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से। ग्राहकों से बोनस के लिये एक तनखा अथवा अधिक लिये पैसों में से मात्र 3500 रुपये गार्डों को देते हैं। पी.एफ. में तो हेराफेरी-दर-हेराफेरी। अनेक शिकायतों के बाद जाँच हुई।

''क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त दिल्ली (दक्षिण) द्वारा 1.4.2003 से 31.3.2011 के दौरान की जाँच कार्यवाही 15.7.2011 से 4.9.2012 तक चली और निर्णय 8.12.2012 को दिया गया। भविष्य निधि राशि घटाने के लिये जी 4 एस सेक्यूर सोल्युशन्स कम्पनी तनखा के अवैध और मनमर्जी वाले बँटवारे कर रही है। ग्राहकों से पी.एफ. के लिये ली राशि का आधा ही भविष्य निधि कार्यालय में कम्पनी जमा कर रही है। हेराफेरी के लिये तनखा के 50 प्रतिशत को बेसिक, 25 प्रतिशत को एच आर ए, 25 प्रतिशत को कन्वेयन्स अलाउन्स आदि कह कर भविष्य निधि राशि आधी की गई। कम्पनी के पी.एफ. खाता नम्बरों में 8-9 हजार नम्बर बीच-बीच में खाली। लगातार काम कर रहे एक वरकर के कई पी.एफ. खाता नम्बर। एक ही पी.एफ. नम्बर कई वरकरों के नाम। दस्तावेजों में फेरबदल। बहुत बड़ी सँख्या में मजदूरों के पी.एफ. में नाम ही नहीं। ट्रेनिंग आदि के नाम से 2 से 5 महीने का प्रत्येक कर्मचारी का पी.एफ. जमा नहीं करना। और, जी 4 एस कम्पनी ने नया सिद्धान्त रच कर अनुपस्थितों का एक पूरा संसार बना डाला है। दिसम्बर 2005 में 5500 वरकर अनुपस्थित बताये — कुल कर्मचारियों में से 45 प्रतिशत के करीब को वर्षों तक कम्पनी अनुपस्थित दिखाती रही। और ऐसे अनुपस्थित वरकर कम्पनी के रोल पर रहे — हाँ, उनकी पी.एफ. राशि जमा नहीं की गई। उपस्थिति पर भी पी.एफ. की आधी राशि जमा करना फण्ड के पैसों में तो कमी है ही, मजदूर की फिर पेन्शन भी कम बनती है, और बीच में मृत्यु पर परिवार को भी आर्थिक हानि। यह सब दर्ज कर जी 4 एस सेक्यूर सोल्युशन्स कम्पनी को आदेश दिया कि 15 दिन के अन्दर 133 करोड़ 76 लाख 14 हजार 176 रुपये जमा करे। कम्पनी ने आदेश का पालन नहीं किया। अपील की। कई तारीखों के बाद अब 5 नवम्बर की तारीख है।

'' जी 4 एस कम्पनी ने पुराने गार्डों को निकालना शुरू कर दिया। मैनेजमेन्ट ने एक ही पत्र में आरोपों का फौरन उत्तर माँगा और फिर उसी पत्र में यह भी लिखा कि आपको तत्काल प्रभाव से सेवामुक्त किया जाता है, हिसाब ले जायें। दिल्ली से बाहर ट्रान्सफर करने लगे। पद घटाना आरम्भ किया। गार्डों ने कम्पनी कार्यालय पर 30.8.2013 से धरना शुरू कर रखा है। जी 4 एस सेक्यूर सोल्युशन्स के 150 गार्ड आई.आई.आई.टी.डी. पर ड्युटी करते हैं और वहाँ पर 30 सितम्बर को प्रदर्शन कर जानकारी दी गई। उन्होंने कम्पनी को पत्र लिखा और फिर 15 अक्टूबर को जी 4 एस का ठेका समाप्त कर दिया। फिर हम ने आस्ट्रेलिया सरकार के दूतावास पर प्रदर्शन कर पत्र दिया — वहाँ भी जी 4 एस के गार्ड लगे हैं। इधर 28 अक्टूबर को यू.एन.डी.पी., यूनिसेफ, वर्ल्ड बैंक कार्यालयों पर प्रदर्शन कर पत्र दिये — इन स्थानों पर भी जी 4 एस के गार्ड हैं और यह मुख्य नियोक्ता है।''■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट। **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14**